



# खामोश शहजादा

Khamosh Shahzada (Hindi)



कफ़ले मदीना लगा रहेगा  
إن شاء الله عزوجل



- फ़ारक़ू बातों के चार लरज़ा ख़ैज़ नुस्खानात
- सास बहू का झगड़ा निमटाने का म-दनी नुस्खा
- मुंह से खून और पीप बह रहा होगा
- खामोशी की ब-र-कत से बीबारे मुस्तफ़ा
- सात म-दनी फूलों का "फ़ारूकी गुलदस्ता"
- बात को फ़ज़ूलिय्यात से पाक करने का बेहतरीन नुस्खा
- बोलने से पहले तोलने का तरीका

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अज़ज़ार क़ादरी रज़वी

مکتبۃ الرینہ  
(بیت دہلیہ)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना  
अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये  
لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ  
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! हम पर इल्म व हिकमत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी  
रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी वाले । (المستطرف ج ١ ص ٤٠٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे ग़मे मदीना

व बकीअ

व मग़फ़रत



www.dawateislami.net

13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

## (खामोश शहजादा)

येह रिसाला (खामोश शहजादा)

शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना  
अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने उर्दू ज़बान में तहरीर  
फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर  
पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी  
पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब या ई-मेइल) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409

E-mail : maktabahind@gmail.com

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

# खामोश शहजादा<sup>1</sup>

शैतान लाख रोके मगर येह रिसाला ( 48 सफ़हात )

मुकम्मल पढ़ लीजिये अगर ज़बान की एहतियात की आदत न  
हुई तो दिल खौफ़े ख़ुदा से ज़िन्दा होने की सूरत में إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ  
आप रो पड़ेंगे ।

## दुरुद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, महबूबे रब्बे क़दीर  
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने दिल पज़ीर है : ज़िक्रे इलाही की  
कसरत करना और मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना फ़क़्र (या'नी तंग दस्ती)  
को दूर करता है । (الْفَوْالُ الْبَدِيعِ ص 273)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

शहजादे ने यकायक चुप साध ली । बादशाह और  
वु-ज़रा और तमाम दरबारी हैरान हैं कि आख़िर इस को हो क्या

1 : येह बयान अमीरे अहले सुन्नत دائمة بركاتهم العالیه ने तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की  
आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के आलामी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने  
मदीना के अन्दर हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ (9 जुमादल उख़्रा 1432 सि.हि./  
12-5-11) में फ़रमाया था । तरमीम व इज़ाफ़े के साथ तहरीरन हाज़िरे ख़िदमत है ।  
मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

फ़रमाने मुस्लफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** (सु)। उस पर दस रहमते भेजता है।

गया है जो बोलता नहीं ! सब ने कोशिश कर देखी लेकिन शहज़ादा ख़ामोश था ख़ामोश ही रहा। ख़ामोशी के बा वुजूद शहज़ादे के मा'मूलात में कोई फ़र्क नहीं आया। एक दिन **ख़ामोश शहज़ादा** अपने साथियों के हमराह परन्दों का शिकार खेलने चला। कमान पर तीर चढ़ाए एक घने दरख़्त के नीचे खड़ा उस में परन्दा तलाश कर रहा था, इतने में दरख़्त के पत्तों के झुंड के अन्दर से किसी परन्दे के बोलने की आवाज़ आई, बस फिर क्या था, उस ने फ़ौरन आवाज़ की समत तीर चला दिया और देखते ही देखते एक परन्दा ज़ख़मी हो कर गिरा और तड़पने लगा। **ख़ामोश शहज़ादा** बे इख़्तियार बोल उठा : परन्दा जब तक ख़ामोश था सलामत रहा मगर बोलते ही तीर का निशाना बन गया और अफ़सोस ! इस के बोलने के सबब मैं भी बोल पड़ा !।

चुप रहने में सो सुख हैं तू येह तजरिबा कर ले  
ऐ भाई ! ज़बां पर तू लगा कुफ़ले मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 66)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

**ख़ामोशी में अम्न है**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह हिकायत मन घड़त ही सही मगर येह ना काबिले तरदीद हकीकत है कि बातूनी शख़्स दूसरों को बोलने पर मजबूर कर देता, अपना और दीगर अफ़राद का वक़्त बरबाद करता, कई बार बोल कर पछताता और बारहा परेशानी उठाता है, वाकेई इन्सान जब तक **ख़ामोश** रहता है बहुत सारी आफ़तों से अम्न में रहता है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शख्स मुझ पर दुरुद पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

## बहराम और परन्दा

कहते हैं : बहराम किसी दरख्त के नीचे बैठा था, उसे एक परन्दे की आवाज़ सुनाई दी और उस ने उसे मार गिराया फिर कहने लगा : ज़बान की हिफ़ाज़त इन्सान और परन्दे दोनों के लिये मुफ़ीद है अगर येह परन्दा अपनी ज़बान संभालता तो हलाक न होता।

(مُسْتَطْرَف ج ١ ص ١٤٧)

## ख़ामोशी की फ़ज़ीलत पर चार फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴿1﴾ يَا نِيّیْ جُو چُوپ رِهَا اُس نِی نَجَات پَآئِی ।  
 ﴿2﴾ الصَّمْتُ سَيِّدُ الْأَخْلَاقِ (ترمذی ج ٤ ص ٢٢٥ حدیث ٢٥٠٩)  
 ﴿3﴾ (الْفِرْدَوْسُ بِمَأْثُورِ الْخَطَّابِ ج ٢ ص ٤١٧ حدیث ٣٨٥٠) اِسْخْلَاقُ كِی سَرْدَار هَی ।  
 ﴿4﴾ (أَيْضاً حَدِيثُ ٣٨٤٩) آدَمِی كَا خَمَامُوشِی پَر كَآئِم رِهِنَا 60 سَال كِی  
 اِسْخْلَاقُ سِی بَهِتَر هَی । (عَبُّ الْإِيمَانِ ج ٤ ص ٢٤٥ حدیث ٤٩٥٣)

## 60 साल की इबादत से बेहतर की वज़ाहत

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَانِ चौथी हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : या'नी अगर कोई शख्स साठ साल इबादत करे मगर ज़ियादा बातें भी करे, अच्छी बुरी बात में तमीज़ न करे इस से येह बेहतर है कि थोड़ी देर ख़ामोश रहे क्यूं कि ख़ामोशी में फ़िक्र भी हुई, इस्लाहे नफ़्स भी, मअरिफ़ व हक़ाइक में इस्तिग़राक़ भी, ज़िक्रे ख़फ़ी के समुन्दर में गोता लगाना भी, मुरा-क़बा भी ।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 361, मुख़्तसरन)

**फ़रमाने मुखफा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख़्त हो गया । (अहमद)

## फ़ालतू बातों के चार लरज़ा ख़ैज़ नुक़सानात

“गपशप” करने वाले, बात का बतंगड़ बनाने वाले, बल्कि फुज़ूल बात चूँकि जाइज़ है गुनाह नहीं येह सोच कर या वैसे ही जो कभी कभार ही फुज़ूल बातें करते हैं वोह भी फुज़ूल बातों के मु-तअल्लिक हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي के तअस्सुरात मुला-हज़ा फ़रमाएं और अपने आप को फुज़ूल गुफ़्त-गू के इन चार नुक़सानात से डराएं। आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى ने इन चार वुजूहात की बिना पर फुज़ूल बातों की मज्मत फ़रमाई है : ﴿1﴾ फुज़ूल बातें किरामन कातिबीन (या'नी आ'माल लिखने वाले बुजुर्ग फ़िरिशतों) को लिखनी पड़ती हैं, लिहाज़ा आदमी को चाहिये कि इन से शर्म करे और इन्हें फुज़ूल बातें लिखने की ज़हमत न दे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पारह 26 सूरे ق, आयत नम्बर 18 में इर्शाद फ़रमाता है :

مَا يَفُظُّ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ  
رَاقِبٌ عَتِيدٌ ﴿١٨﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कोई बात वोह ज़बान से नहीं निकालता कि उस के पास एक मुहाफ़िज़ तय्यार न बैठा हो।

﴿2﴾ येह बात अच्छी नहीं कि फुज़ूल बातों से भरपूर आ'माल नामा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश हो ﴿3﴾ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दरबार में तमाम मख़्लूक के सामने बन्दे को हुक्म होगा कि अपना आ'माल नामा पढ़ कर सुनाओ ! अब क़ियामत की ख़ौफ़नाक सख़्त्रियां उस के सामने होंगी, इन्सान बरहना (या'नी नंगा) होगा, सख़्त प्यासा होगा,

**फ़रमाने गुस्त्रफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (مُعْتَبَرَات)

भूक से कमर टूट रही होगी, जन्नत में जाने से रोक दिया गया होगा और हर क़िस्म की राहत उस पर बन्द कर दी गई होगी, ग़ौर तो कीजिये ऐसे तक्लीफ़ देह हालात में **फुज़ूल बातों से भरपूर आ 'माल नामा** पढ़ कर सुनाना किस क़दर परेशान कुन होगा ! (हि़साब लगाइये अगर रोज़ाना सिर्फ़ 15 मिनट भी फुज़ूल बातें की हैं तो एक महीने के साढ़े सात घन्टे हुए और एक साल के 90 घन्टे, बिलफ़र्ज किसी ने पचास साल तक रोज़ाना औ-सतन 15 मिनट फुज़ूल गुफ़्त-गू की तो 187 दिन 12 घन्टे हुए या'नी **छ माह से जाइद**, तो ग़ौर फ़रमाइये ! क़ियामत का होलनाक दिन जिस में सूरज सिर्फ़ एक मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा, ऐसी होशरुबा गरमी में मुसल्सल बिला वक्फ़ा छ माह तक कौन "आ'माल नामा" पढ़ कर सुना सकेगा ! येह तो सिर्फ़ यौमिय्या पन्दरह मिनट की फुज़ूल गोई का हि़साब है । हमारे तो बसा अवक़ात कई कई घन्टे दोस्तों के साथ "फुज़ूल गपशप" में गुज़र जाते हैं, गुनाहों भरी बातें और दीगर बुराइयां मज़ीद बरआं) ﴿4﴾ बरोजे क़ियामत बन्दे को फुज़ूल बातों पर मलामत की जाएगी और उस को शरमिन्दा किया जाएगा । बन्दे के पास इस का कोई जवाब न होगा और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सामने शर्म व नदामत से पानी पानी हो जाएगा ।

(منهاج العابدین ص 67)

हर लफ़ज़ का किस तरह हि़साब आह ! मैं दूंगा  
अल्लाह ज़बां का हो अ़ता कुफ़्ले मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 66)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ न पढ़ा उस ने जफ़ा की ! (عمران)

## सब से ज़ियादा नुक़सान देह चीज़

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : एक बार मैं ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! आप मेरे लिये सब से ज़ियादा ख़तरनाक और नुक़सान देह चीज़ किसे क़रार देते हैं ? तो सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपनी ज़बाने मुबारक पकड़ कर इर्शाद फ़रमाया : “इसे ।” (سُنَنِ تِرْمِذِي ج ٤ ص ١٨٤ حَدِيث ٢٤١٨)

## भलाई की बात करो या चुप रहो

काश ! बुख़ारी शरीफ़ की येह हदीसे पाक हमारे ज़ेहनो दिमाग़ में रासिख़ हो जाए, जिस में येह भी है : “जो अल्लाह और क़ियामत पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि भलाई की बात करे या ख़ामोश रहे ।” (بُخَارِي ج ٤ ص ١٠٥ حَدِيث ٦٠١٨) दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 217 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, “अल्लाह वालों की बातें” सफ़हा 91 पर अमीरुल मुअमिनीन, हज़रते सय्यिदुना सिद्दीके अक़बर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “उस बात में कोई भलाई नहीं जिस से मक़सूद अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की खुशनूदी न हो ।” (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء ج ١ ص ٧١) हज़रते सय्यिदुना इमाम सुफ़यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : इबादत का अव्वल ख़ामोशी होती है, फिर इल्म हासिल करना, इस के बा'द उसे याद करना, फिर उस पर अमल करना और उसे फैलाना ।

(تَارِيخِ بَغْدَاد ج ٦ ص ٦)



फ़रमाने मुखफ़ा صلى الله تعالى عليه و اله وسلم : जो मुझ पर रोज़ जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (क़ुरआन)

## अगर जन्नत दरकार हो तो.....

हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की ख़िदमते बा अ-ज़मत में लोगों ने अर्ज किया : कोई ऐसा अमल बताइये कि जिस से जन्नत मिले। इर्शाद फ़रमाया : “कभी बोलो मत।” अर्ज की : येह तो नहीं हो सकता। फ़रमाया : “अच्छी बात के सिवा ज़बान से कुछ मत निकालो।”

(احياء العلوم ج 3 ص 126)

अक्सर मेरे होंटों पे रहे ज़िक्रे मदीना

अल्लाह ज़बां का हो अता कुफ़ले मदीना

(वसाइले बख़्शाश, स. 66)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

## ख़ामोशी ईमान की सलामती का ज़रीआ है

जिस बंद नसीब की ज़बान कैंची की तरह हर किसी की बात काटती चली जाती होगी, वोह दूसरे की बात अच्छी तरह समझने से महरूम रहेगा बल्कि बातूनी शख्स के लिये येह भी ख़तरा रहता है कि बक बक करते हुए ज़बान से **कुफ़्रियात** **مَمَّا دَلَّ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** निकल जाएं। चुनान्चे **हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي “एहयाउल उलूम” में बा’ज बुजुर्गो का कौल नक़ल करते हुए फ़रमाते हैं : ख़ामोश रहने वाले शख्स में दो खूबियां जम्अ हो जाती हैं ﴿1﴾ उस का दीन सलामत रहता है और ﴿2﴾ दूसरे की बात अच्छी तरह समझ लेता है।

(احياء العلوم ج 3 ص 127)

फ़रमाये ग़ुस्ल फ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद पाक को कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा़रत है । (बुख़ारी)

## ख़ामोशी जाहिल का पर्दा है

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उयैना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : **الْصَّمْتُ رَيْنٌ لِلْعَالِمِ وَسِتْرٌ لِلْجَاهِلِ** : ख़ामोशी अ़ालिम का वक़ार और जाहिल का पर्दा है ।

(شُعَبُ الْإِيمَانِ ج ٧ ص ٨٦ حديث ٤٧٠١)

## ख़ामोशी इबादत की चाबी है

हज़रते सय्यिदुना इमाम सुफ़यान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से मरवी है : ज़ियादा ख़ामोशी इबादत की चाबी है ।

(الصَّمْتُ مَعَ مَوْسُوْعَةِ ابْنِ أَبِي الدُّنْيَا ج ٧ ص ٢٥٥ رقم ٤٣٦)

## माल की हिफ़ाज़त आसान है मगर ज़बान.....

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन वासेअ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से फ़रमाया : इन्सान के लिये ज़बान की हिफ़ाज़त माल की हिफ़ाज़त से ज़ियादा दुश्वार है ।

(اتحافُ السَّادَةِ لِلرِّيْدِيِّ ج ٩ ص ١٤٤)

**अफ़सोस !** कि अपने माल की हिफ़ाज़त के मुआ-मले में उमूमन हर एक होशियार होता है, हालां कि माल जाएअ हो भी गया तो सिर्फ़ दुन्या का नुक़सान है । सद करोड़ अफ़सोस ! ज़बान की हिफ़ाज़त की सोच निहायत कम रह गई है, यकीनन ज़बान की हिफ़ाज़त न करने के सबब दुन्या के नुक़सान के साथ साथ आख़िरत की बरबादी का भी पूरा पूरा इम्कान है ।

फरमाने मुखफा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ा कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है। (मुरान)

बक बक की येह आदत न सरे हृशर फंसा दे

अल्लाह ज़बां का हो अता कुप्ले मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 66)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

**बोलने वाला बारहा पछताता है**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह ना क़ाबिले तरदीद हकीकत है कि खामोश रहने में नदामत का इम्कान बहुत कम है जब कि मौक़अ बे मौक़अ “बोल पड़ने” की आदत से बारहा SORRY कहना पड़ता और मुआफ़ी मांगनी पड़ती है या फिर दिल ही दिल में पछतावा होता है कि मैं यहां न बोला होता तो अच्छा था क्यूं कि मेरे बोलने पर सामने वाले की झिजक उड़ गई, खरी खरी सुननी पड़ी, फुलां नाराज़ हो गया, फुलां का चेहरा उतर गया, फुलां का दिल दुख गया। अपना वक़ार भी मजरूह हुवा वगैरा वगैरा। हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन नज़्र हारिसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي से मरवी है : ज़ियादा बोलने से वक़ार (दबदबा) जाता रहता है।

(الْمَصْنُوت لِأَيِّن أَبِي الدُّنْيَا ج ٧ ص ٦٠ رقم ٥٢)

**“बोल कर” पछताने से “न बोल कर” पछताना अच्छा**

सच है, “बोल कर” पछताने से “न बोल कर” पछताना अच्छा और “ज़ियादा खा कर” पछताने से “कम खा कर” पछताना अच्छा कि जो बोलता रहता है वोह मुसीबतों में फंसा रहता है और जो ज़ियादा खाने का आदी होता है वोह अपना मे’दा तबाह कर बैठता, अक्सर मोटापे का शिकार हो जाता और तरह तरह की बीमारियों की ज़द में रहता है, अगर जवानी में अमराज़ से क़दरे बचत हो भी

**फ़रमाने मुखफा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अब्बाह** (طبرانی) उस पर सो रहमते नाज़िल फ़रमाता है।

गई तो जवानी ढलने के बा'द बसा अवकात “सरापा मरज़” बन जाता है। ज़ियादा खाने के नुक़सानात और मोटापे के इलाज वगैरा जानने के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अब्वल के बाब “पेट का कुफ़ले मदीना” का मुता-लआ फ़रमाइये।

### गूंगा फ़ाएदे में रहता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा जाए तो नाबीना फ़ाएदे में रहता है कि ग़ैर औरतों को घूरने, अमरदों पर लज़्ज़त भरी निगाहें डालने, फ़िल्में डिरामे देखने, किसी “हाफ़ पेन्ट” वाले के खुले घुटने और रानें देखने वगैरा वगैरा बद निगाहियों के गुनाहों से बचा रहता है। इसी तरह गूंगा भी ज़बान की बे शुमार आफ़तों से महफूज़ रहता है। अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ फ़रमाते हैं : काश मैं गूंगा होता मगर ज़िक़ुल्लाह की हद तक गोयाई (या'नी बोलने की सलाहिय्यत) हासिल होती। (مِرْقَاةُ الْمَفَاتِيحِ ج ١٠ ص ٨٧ تحت الحديث ٥٨٢٦) “एहयाउल इलूम” में है, हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने एक ज़बान दराज़ औरत देखी तो फ़रमाया : अगर येह गूंगी होती तो इस के हक़ में बेहतर था। (احياء العلوم ج ٣ ص ١٤٢)

### घर अमन का गहवारा कैसे बने !

प्यारे प्यारे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मीठे मीठे सहाबी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के इर्शाद से खुसूसन हमारी वोह इस्लामी बहनें दर्स हासिल करें जो हर वक़्त “लगाई बुझाई” और “तेरी मेरी” में मगन रहतीं और इधर की उधर और उधर की इधर लगाने से फुरसत

**फ़रमाने मुस्वफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख्स है। (अभिजात)

नहीं पातीं। अगर इस्लामी बहनें सहीह मा'नों में अपनी ज़बान पर “कुफ़ले मदीना” लगा लें तो इन की घरेलू परेशानियां, रिश्तेदारों से ना चाक़ियां और सास बहू की लड़ाइयां वगैरा बहुत सारे मसाइल हल हो जाएं और सारे का सारा ख़ानदान अम्न का गहवारा बन जाए क्यूं कि ज़ियादा तर घरेलू झगड़े ज़बान के बे जा इस्ति 'माल ही के सबब होते हैं।

### सास बहू का झगड़ा निमटाने का म-दनी नुस्खा

सास अगर डांट डपट करती हो तो “बहू” को चाहिये कि सिर्फ़ और सिर्फ़ सब्र करे, अपनी सास को जवाबन एक लफ़्ज़ भी न कहे और अपने शोहर को भी शिकायत न करे, अपने मयके में भी कुछ न बताए बल्कि मुंह भी न चढ़ाए, नीज़ अपने बच्चों या बरतनों वगैरा पर भी गुस्सा न निकाले। **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** काम्याबी उस के क़दम चूम लेगी। कहा जाता है : “एक चुप सो को हराए।” इसी तरह अगर कोई बहू अपनी “सास” से झगड़ा करती हो तो सास को चाहिये कि बिल्कुल जवाबी कारवाई न करे, सिर्फ़ ख़ामोशी ही इख़्तियार करे घर के किसी फ़र्द हत्ता कि अपने बेटे को भी शिकायत न करे। **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** इस कहावत, “एक चुप सो सुख” के मुताबिक़ सुख चैन पाएगी। जी हां अगर सहीह मा'नों में सगे मदीना **عَفَى عَنْهُ** के इस “म-दनी नुस्खे” पर अमल किया गया तो **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** जल्द ही सास बहू की लड़ाई ख़त्म हो जाएगी और घर अम्न का गहवारा बन जाएगा। सास बहू के झगड़ों के इलाज के लिये हिक्मत भरे म-दनी फूलों पर मुश्तमिल V.C.D “घर अम्न का गहवारा कैसे बने !” मक-त-बतुल मदीना से हासिल कीजिये

फ़रमाने मुखफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स को नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े । (ग़म)

या दा'वते इस्लामी की वेब साइट : [WWW.DAWATEISLAMI.NET](http://WWW.DAWATEISLAMI.NET)  
पर मुला-हज़ा फ़रमाइये । الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ इस v.c.d. की ब-र-कत से कई घर अमन का गहवारा बन चुके हैं !

है दबदबा ख़ामोशी में हैबत भी है पिन्हां

ऐ भाई ज़बां पर तू लगा कुफ़ले मदीना

(वसाइले बख़्शाश, स. 66)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

**ज़बान की ख़िदमत में दर-ख़्वास्त**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब ज़बान सीधी रहेगी और इस से अच्छी अच्छी बातों का सिल्लिसला होगा तो इस का फ़ाएदा सारा ही जिस्म उठाएगा और अगर येह टेढ़ी चली म-सलन किसी को झिड़का, गाली दी, किसी की बे इज़्ज़ती कर दी, गीबत व चुग़ली की, झूट बोला तो बसा अवक़ात दुन्या में भी जिस्म की पिटाई हो जाती है । हमारे मीठे मीठे प्यारे प्यारे और सब से अच्छे और ख़ुश अख़्लाक़ आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने बा सफ़ा है : “जब इन्सान सुब्द करता है तो उस के आ'ज़ा झुक कर ज़बान से कहते हैं, हमारे बारे में अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) से डर क्यूं कि हम तुझ से वाबस्ता हैं अगर तू सीधी रहेगी तो हम भी सीधे रहेंगे और अगर तू टेढ़ी हो गई तो हम भी टेढ़े हो जाएंगे ।”

(سُنَنِ تِرْمِذِي ج ٤ ص ١٨٣ حَدِيث ٢٤١٥)

या रब न ज़रूरत के सिवा कुछ कभी बोलूं !

अल्लाह ज़बां का हो अता कुफ़ले मदीना

(वसाइले बख़्शाश, स. 66)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ो **اَللّٰهُمَّ** غُرْ وَجَلْ تُوْمَ پَر رَهमत भेजेगा। (अबुनूर)

हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) सरापा हक़ हैं फिर आप तक बातिल की रसाई कैसे हो। (मिरआतुल मनाज़ीह, जि. 8, स. 81)

## बोलने और चुप रहने की दो किस्में

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है :

إِمْلَاءُ الْخَيْرِ خَيْرٌ مِّنَ السُّكُوتِ وَالسُّكُوتُ خَيْرٌ مِّنْ إِمْلَاءِ الشَّرِّ या'नी अच्छी बात कहना ख़ामोशी से बेहतर है और ख़ामोश रहना बुरी बात कहने से बेहतर है।

हज़रते सय्यिदुना अली बिन उस्मान हिजवेरी अल मा'रूफ़ दाता गन्ज बख़्श رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ "कशफुल महजूब" में फ़रमाते हैं : कलाम (या'नी बोलना) दो तरह का होता है। एक कलामे हक़ और दूसरा कलामे बातिल, इसी तरह ख़ामोशी भी दो तरह की होती है :

(1) बा मक़सद (म-सलन फ़िक्रे आख़िरत या शर-ई अहक़ाम पर ग़ौरो ख़ौज़ वग़ैरा के लिये) ख़ामोशी (या'नी चुप रहना) (2) ग़फ़लत भरी (या مَعَاذَ اللهِ गन्दे तसव्वुरात या दुन्या के बे जा ख़यालात से भरपूर) ख़ामोशी। हर शख़्स को सुकूत (या'नी ख़ामोशी) की हालत में ख़ूब अच्छी तरह ग़ौर कर लेना चाहिये कि अगर इस का बोलना हक़ है तो बोलना उस की ख़ामोशी से बेहतर है और अगर उस का बोलना बातिल है तो उस की ख़ामोशी उसके बोलने से बेहतर है। हुज़ूर दाता गन्ज बख़्श رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ गुफ़्त-गू के हक़ या बातिल होने के मु-तअल्लिक़ समझाने के लिये एक हिक्क़ायत नक़ल करते हुए फ़रमाते हैं : एक मर्तबा हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिबली बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي बग़दाद शरीफ़ के एक महल्ले से गुज़रते हुए एक शख़्स को सुना वोह कह रहा था :



फ़रमाते मुखफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ा बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मफ़िरत है । (मा'मूर)

या'नी खामोशी बोलने से बेहतर है । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उसे फ़रमाया : “तेरे बोलने से तेरा खामोश रहना अच्छा है और मेरा बोलना खामोश रहने से बेहतर है ।”

(ماخوذ از كشف المحجوب ص ۴۰۲)

## फ़ोहूश बात की ता'रीफ़

कितने खुश नसीब हैं वोह इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें ! जो सिर्फ़ अच्छी गुफ़्त-गू के लिये ही ज़बान को ह-र-कत में लाते और ख़ूब ख़ूब “नेकी की दा'वत” लोगों तक पहुंचाते हैं । अफ़सोस ! आज कल लोगों की बहुत ही कम बैठकें ऐसी होती होंगी जो फ़ोहूश बातों से पाक हों हत्ता कि मज़हबी वज़अ क़त्अ के अफ़राद भी इस से बच नहीं पाते । शायद उन्हें येही नहीं पता होता कि फ़ोहूश बात किसे कहते हैं ! तो सुनिये : **फ़ोहूश बात की ता'रीफ़** येह है : **التَّغْيِيرُ عَنِ الْأُمُورِ الْمَسْتَقْبَحَةِ بِالْعِبَارَاتِ الصَّرِيحَةِ** : या'नी शर्मनाक उमूर (म-सलन गन्दे और बुरे मुआ-मलात) का खुले अल्फ़ाज़ में तज़्किरा करना । (احياء العلوم ج ۳ ص ۱۰۱) तो वोह नौ जवान जो शहवत की तस्कीन की खातिर ख़्वाह म ख़्वाह शादियों की ख़ल्वतों और पर्दे में रखने की बातों के क़िस्से छेड़ते हैं, नीज़ फ़ोहूश या'नी बे हयाई की बातें करने वाले बल्कि सिर्फ़ सुन कर दिल बहलाने वाले, गन्दी गालियां ज़बान पर लाने वाले, बे शर्माना इशारे करने वाले, इन गन्दे इशारों से लुत्फ़ अन्दोज़ होने वाले और “गन्दी लज़्ज़तों” के हुसूल की खातिर फ़िल्में डिरामे (कि इन में उमूमन बे हयाई की भरमार होती है) देखने वाले एक दिल हिला

**फरमाने मुखफा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है **अब्बाह** (مبارك) उस के लिये एक कीरात अन्न लिखता और कीरात उद्दुद पहाड़ जितना है।

देने वाली रिवायत बार बार पढ़ें और खौफ़े खुदा वन्दी से लरजें  
चुनान्चे

## मुंह से खून और पीप बह रहा होगा

**मन्कूल** है : चार तरह के जहन्नमी कि जो खौलते पानी और आग के माबैन (या'नी दरमियान) भागते फिरते वैल व सुबूर (या'नी हलाकत) मांगते होंगे, इन में से एक वोह शख्स कि उस के **मुंह से खून, पीप बहरहा होगा**, जहन्नमी कहेंगे : “इस बद बख्त को क्या हुवा कि हमारी तकलीफ़ में इज़ाफ़ा किये देता है ?” कहा जाएगा : “येह बद बख्त बुरी और ख़बीस (या'नी गन्दी) बात की तरफ़ **मु-तवज्जेह** हो कर उस से लज़ज़त उठाता था जैसा कि जिमाअ की बातों से ।” (إِتْحَافُ السَّائِدَةِ لِلرِّيْدِي ج ٩ ص ١٨٧) ग़ैर औरतों या अमरदों के बारे में आने वाले गन्दे वस्वसों पर तवज्जोह जमाने, जान बूझ कर बुरे ख़यालात में खुद को गुमाने और **مَعَادُ اللهِ**, “गन्दी ह-र-कत” के तसव्वुर के ज़रीए लज़ज़त उठाने वालों को बयान कर्दा रिवायत से इब्रत हासिल करनी चाहिये ।

न वस्वसे आएं न मुझे गन्दे ख़यालात

दे ज़ेहन का और दिल का खुदा ! कुफ़्ले मदीना

(वसाइले बख़्शाश, स. 66)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

## कुत्ते की शक्ल वाला

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन मैसरह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ  
फ़रमाते हैं : “फ़ोहूश कलामी (या'नी बे हयाई की बातें) करने

**फ़रमाने मुस्वफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे। (طبرانی)

वाला क़ियामत के दिन कुत्ते की शक्ल में आएगा।”

(إتحاف السادة للزبيدي ج ٩ ص ١٩٠)

## जन्नत हराम है

हुज़ूर ताजदारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने बा करीना है : “उस शख़्स पर जन्नत हराम है जो फ़ोहूश गोई (या'नी बे हयाई की बात) से काम लेता है।”

(الصّنت لابن أبي الدنيا ج ٧ ص ٢٠٤ حديث ٢٢٥)

## सात म-दनी फूलों का “फ़ारूकी गुलदस्ता”

अमीरुल मुअमिनीन, इमामुल अ़दिलीन, मु-तम्मिमुल अर-बईन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : ❀ फुज़ूल गोई से बचने वाले को हिक्मत व दानाई अ़ता की जाती है ❀ फुज़ूल निगाही या'नी बिला ज़रूरत इधर उधर देखने से बचने वाले को खुशूए क़ल्ब (सुकूने क़ल्बी) ❀ फुज़ूल त़अाम (या'नी डट कर खाना या बिग़ैर किसी भूक के सिर्फ़ लज़ज़त के लिये तरह तरह की चीजें खाना) छोड़ने वाले को इबादत में लज़ज़त दी जाती है ❀ फुज़ूल हंसने से बचने वाले को रो'बो दबदबा इनायत होता है ❀ मज़ाक़ मस्ख़री से बचने वाले को नूरे ईमान नसीब होता है ❀ दुन्या की महब्बत से बचने वाले को आख़िरत की महब्बत दी जाती है ❀ दूसरों के ऐब ढूंडने से बचने वाले को अपने ऐबों की इस्लाह की तौफ़ीक़ मिलती है।

(ماخوذ أن المنبهات ص ٨٩)

फ़रमाने मुखफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूद पाक पढ़ा **अल्लाह** (سَلِّمْ) उस पर दस रहमतेँ भेजता है।

## ऐ काश ! ऐसा हो जाए.....

हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन हर म-दनी माह के पहले पीर शरीफ़ को इस रिसाले के मुता-लए का मा'मूल बना ले, **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** अपने क़ल्ब में हैरत अंगेज़ तब्दीली महसूस फ़रमाएंगे। **म-दनी इन्आम** नम्बर 45 और 46 के मुताबिक़ अमल ज़बान की हिफ़ाज़त का बेहतरीन ज़रीआ है लिहाज़ा फ़ुज़ूल गोई से बचने की आदत डालने के लिये ज़रूरी गुफ़्त-गू भी कम लफ़्ज़ों में निमटाए नीज़ कुछ न कुछ बात इशारे से और लिख कर करने की कोशिश कीजिये और फ़ुज़ूल बात मुंह से निकल जाने की सूरत में फ़ौरन एक या तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़ने का मा'मूल बना लीजिये।

## एक सहाबी के जन्मती होने का राज़

हमारे मीठे मीठे आका मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की अता से लोगों को देख कर ही पहचान लेते थे कि येह जन्मती है या जहन्नमी बल्कि आने वाले की पहले ही से ख़बर हो जाती कि वोह जन्मती है या दोज़ख़ी, चुनान्वे **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इशाद फ़रमाया : “जो शख़्स सब से पहले इस दरवाज़े से दाख़िल होगा वोह जन्मती होगा।” इतने में हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** दरवाज़े से दाख़िल हुए, लोगों ने उन को मुबारक बाद देते हुए दरयाफ़्त किया कि आख़िर किस अमल के सबब आप को येह सआदत मिली ? सय्यिदुना **अब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया : मेरा अमल बहुत ही थोड़ा है, और जिस की मैं **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** से उम्मीद रखता हूँ वोह मेरे

**फरमाने मुखफा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शख्स मुझ पर दुरूद पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

सीने की सलामती और बे मक्सद बातों को छोड़ना है।

(أَلَصَّنْتُ لِأَبْنِ أَبِي الْأُنْبِيَا ج ٧ ص ٨٦ رقم ١١١)

इस हदीसे पाक के अल्फ़ाज़ “سَلَامَةُ الصُّدْرِ” या’नी “सीने की सलामती” से मुराद दिल का लगिवयात (या’नी बेहूदा) और हसद वगैरा अमराजे **बातिनिख्या** से पाक होना और दिल में ईमान का मज़बूत व मुस्तहक़म होना है।

रफ़्तार का गुफ़्तार का किरदार का दे दे

हर उज़्व का दे मुझ को खुदा कुफ़्ले मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 66)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

**फुज़ूल बातों की मिसालें**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! “फुज़ूल बातें” अगर्चे गुनाह नहीं ताहम इस में कोई भलाई भी नहीं। **سُبْحَانَ اللهِ!** हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह** बिन सलाम **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** को ज़बाने रिसालत से दुन्या ही में **जन्नत की बिशारत** इनायत हो गई ! आप **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** में एक खूबी येह भी थी कि कभी **फुज़ूल बातों** में नहीं पड़ते थे, जिस काम से वासिता न होता उस के बारे में पूछते तक नहीं थे, लेकिन अफ़सोस ! हमारा जिन मुआ-मलात से दूर का भी तअल्लुक नहीं होता फिर भी उस के **मु-तअल्लिक** बे जा सुवालात करते ही रहते हैं। म-सलन **❁** येह कितने में लिया ? वोह कितने में मिला ? फुलां जगह प्लोट का क्या भाव चल रहा है ? **❁** किसी के मकान में गए या किसी ने नया मकान लिया तो सुवाल होता है : कितने का लिया ? कितने कम्रे हैं ? किराया कितना है ?

**फ़रमाने मुखफा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख्त हो गया । (अब्र)।

मकान मालिक कैसा है ? (यह सुवाल अक्सर **مَعَادَ اللَّهِ** गीबत व तोहमत का दरवाजा खोलने का सबब बन जाता है क्यूं कि इस का जवाब उमूमन बिला इजाजते शर-ई कुछ इस तरह गुनाहों भरा मिलता है : हमारा मकान मालिक बहुत सख्त मिजाज/ बे रहम/ टेढ़ा/ खोचड़ा/ खर दिमाग/ वायड़ा/ कन्जूस है) वगैरा वगैरा ❀ इसी तरह जब कोई नई दुकान, कार या स्कूटर वगैरा खरीदे तो बिला वजह खरीदने वाले से उस का भाव, पाएदारी, नक़द, उधार, क़िस्तों वगैरा से मु-तअल्लिक सुवालात किये जाते हैं ❀ बेचारा मरीज़ जिस से बोला तक नहीं जाता है उस से भी बा'ज इयादत करने वाले नादान इन्सान जैसे “डॉक्टरों के भी डॉक्टर” हों यूं पूरा पूरा हिसाब लेते और सब तफ़्सीलात मा'लूम करते हैं यहां तक कि एक्सरे और लेबोरेटरी की कारकदर्गी भी वुसूल करते हैं और अगर **ओपरेशन** हुवा हो तो बिला वजह सुवालात के ज़रीए टांकों की ता'दाद तक पूछ लेते हैं, हत्ता कि “शर्म की जगह” का मस्अला हो तब भी बा'ज बे शर्म उस का तफ़्सीली एहतिसाब करते हुए नहीं शरमाते । इस तरह की फुज़ूलिय्यात में औरतें भी मर्दों से किसी तरह पीछे नहीं रहतीं ❀ गरमी या सर्दी के मौसिम में इस की कमी ज़ियादती के मौक़अ पर बिला हाजत बातें होती हैं म-सलन गरमी के मौसिम में बा'ज अबुल फुज़ूल “उफ़ ! उफ़” करते हुए कहेंगे : एक तो आज कल सख्त गरमी है और ऊपर से बिजली भी बार बार चली जाती है ❀ इसी तरह सर्दियों में अदाकारी के साथ दांत बजाते हुए कहेंगे : आज तो बहुत कड़ाके की सर्दी है ❀ अगर बारिश का मौसिम है तो बिला ज़रूरत इस पर भी तब्सिरा किया जाता है म-सलन आज कल तो बारिशें बहुत

**फ़रमाने मुस्वफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अब्बाह** (سَلِّمْ) उस पर दस रहमतें भेजता है।

हो रही हैं, हर तरफ़ पानी खड़ा हो गया है, इन्तिज़ामिया कीचड़ साफ़ करवाने का कोई ख़याल नहीं करती वगैरा वगैरा ❀ इसी तरह मुल्की और सियासी हालात पर बिला निय्यते इस्लाह बे जा तब्बिरे, मुख़्तलिफ़ सियासी पार्टियों पर बिला वजह तन्कीदें ❀ किसी शहर या मुल्क का सफ़र किया है तो वहां के पहाड़ों और सब्ज़ा ज़ारों की गैर ज़रूरी मन्ज़र कशी, मकानों और सड़कों की तफ़सीलात का बिला ज़रूरत बयान वगैरा वगैरा येह सब फुज़ूल गोई नहीं तो और क्या है ? अलबत्ता येह याद रहे कि मज़कूरा बाला उमूर के बारे में अगर हम किसी को बातें करता हुवा पाएं तो अपने आप को बद गुमानी से बचाएं क्यूं कि बा'ज अवकात ज़ाहिरी दुन्यवी बातें भी अच्छी निय्यत के बाइस कारे सवाब हो जाती हैं या कम अज़ कम फुज़ूलिय्यात में नहीं रहतीं।

**फुज़ूल गो का झूटे मुबा-लगे के गुनाह से बचना दुश्वार होता है**

येह ज़ेहन में रहे कि फुज़ूल बोलना गुनाह नहीं मगर फुज़ूल गोई सिफ़ उस वक़्त है जब कि बिला कम व कास्त और सहीह सहीह बयान करे, अगर झूटे मुबा-लगे किये तो गुनाहों की खाई में जा गिरा ! तश्वीश की बात येह है कि इस तरह की गुफ़्त-गू को नाप तोल कर दुरुस्त बयान करना कि “फुज़ूल गोई” की हद से आगे न बढ़े येह बहुत मुशिकल अम्र होता है, अक्सर झूटे मुबा-लगे हो ही जाते हैं, फुज़ूल गो बारहा गीबतों, तोहमतों, ऐब दरियों और दिल आज़ारियों वगैरा के दलदल में भी जा पड़ता है। लिहाज़ा आफ़िय्यत चुप रहने ही में है कि **एक चुप सो सुख** ।

**काश ! बोलने से क़ब्ल ज़रा ठहर कर तोलने की सआदत मिल जाए**

वाक़ेई अगर कोई इन्सान बोलने से क़ब्ल “तोलने” या'नी गौर

फ़रमाने मुस्ताफ़ा ﷺ : جئوا شمس مؤمنين على الله تعالى عليه وآله وسلم : जो शरख़ मुझ पर दुरूद पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

करने की आदत डाले तो उसे अपनी बे शुमार **फुज़ूल बातें** खुद ही महसूस होनी शुरू हो जाएं! सिर्फ़ “फुज़ूल बातें” हों तो अगर्चे गुनाह नहीं मगर कई तरह के नुक़सानात इन में मौजूद हैं म-सलन इन बातों में ज़बान चलाने की ज़हमत होती और कीमती वक़्त बरबाद होता है अगर उतनी देर **ज़िक़ुल्लाह** या दीनी मुता-लआ कर लिया जाए, या कोई सुन्नत बयान कर दी जाए तो सवाब का अम्बार लग जाए।

### दहशत गर्दियों के फुज़ूल तज़िक़रे

इसी तरह **مَدَائِلُ** कहीं दहशत गर्दी की वारिदात हो गई तो बस लोगों को **फुज़ूल बल्कि बा 'ज' सूरतों में गुनाहों भरी बहस** के लिये एक मौजूद ही हाथ आ गया! हर जगह उसी का तज़िक़रा, बे सर व पा क़ियास आराइयां, बे तुके तब्बिरे, अटकल से किसी भी पार्टी या लीडर वगैरा पर **तोहमत** लगा देना वगैरा। अक्सर येह गुफ़्त-गू “फुज़ूल” ही नहीं, लोगों में ख़ौफ़ो हिरास फैलने का बाइस, अपवाहें गर्म होने का सबब और हंगामे बरपा होने की “वजह” भी बनती हैं, धमाकों और दहशत गर्दियों की वारिदातें सुनने सुनाने में नफ़्स को बे इन्तिहा दिलचस्पी होती है, बसा अवकात लब पर दुआइया अल्फ़ाज़ होते हैं मगर क़ल्ब की गहराइयों में **सन्सनी ख़ैज़ ख़बरे** सुनने सुनाने के ज़रीए हज़ (या'नी मजे) उठाने और लुत्फ़ अन्दोज़ होने का ज़ब्बा छुपा होता है, काश! नफ़्स की इस शरारत को पहचानते हुए हम दहशत गर्दियों और धमाकों के तज़िक़रों में दिलचस्पी लेने से बाज़ आ जाएं। हां मज़्लूमाना शहादत पाने वालों, ज़ख़िमियों और **मु-तअस्सिरा** मुसलमानों की हम-दर्दियों, ख़िदमतों और अम्न व सलामती की दुआओं से गुरेज़



**फरमाने मुखफा** صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख्त हो गया । (ابن)

न किया जाए कि येह सवाब के काम हैं । बस जब भी इस तरह की गुफ्त-गू करने सुनने की सूरत पैदा हो तो अपने दिल पर गौर कर लेना चाहिये कि निय्यत क्या है ? अगर अच्छी निय्यत पाएं तो उम्दा और बहुत उम्दा है मगर अक्सर इस किस्म की गुफ्त-गू का हासिल “सन्सनी” से लुत्फ अन्दोजी ही पाया जाता है ।

### सिद्दीके अक्बर मुंह में पथ्थर रख लेते

याद रखिये ! ज़बान भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अज़ीम ने'मत है, इस के बारे में भी कियामत के रोज़ सुवाल होना है, लिहाज़ा इस का हरगिज़ बे जा इस्ति'माल न किया जाए । सय्यिदुना सिद्दीके अक्बर कर्तई जन्नती होने के बा वुजूद ज़बान की आफतों से बेहद मोहतात रहा करते थे चुनान्वे “एहयाउल उलूम” में है : हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अपने मुबारक मुंह में पथ्थर रख लिया करते थे ताकि बात करने का मौकअ ही न रहे ।

(احياء العلوم ج ۳ ص ۱۳۷)

रख लेते थे पथ्थर सुन अबू बक्र दहन में

ऐ भाई ! ज़बां पर तू लगा कुप्ले मदीना

(वसाइले बख्शिश, स. 66)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### 40 बरस तक खामोशी की मश्क

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर आप वाकेई खामोशी की आदत बनाना चाहते हैं तो इस पर सन्जी-दगी से गौर करना होगा, और ख़ूब मश्क करनी पड़ेगी वरना सर-सरी कोशिश से ज़बान पर

**फरमाते मुस्ताफा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी। (رُحُ الْبَرَاءِ)

**कुफ़ले मदीना** लगना दुश्वार है। ज़बान के बे जा इस्ति'माल की तबाह कारियों से खुद को डराते हुए खामोशी की आदत बनाने की भरपूर सअय फ़रमाइये **اِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** काम्याबी आप के क़दम चूमेगी। मगर कोशिश इस्तिक़ामत के साथ होनी चाहिये। आइये ! एक कोशिश करने वाले की इस्तिक़ामत की हिक़ायत सुनते हैं, हज़रते सय्यिदुना अरताह बिन मुन्ज़िर **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : एक शख़्स **चालीस साल** तक ख़ामोश रहने की इस तरह "मशक़" करता रहा कि अपने मुंह में पथ्थर रखता, यहां तक कि खाने या पीने या सोने के इलावा वोह पथ्थर मुंह से न निकालता। (الصُّنْتِ لِابْنِ أَبِي الثُّنْيَا ج ٧ ص ٢٠٦ رقم ٤٣٨) याद रहे ! पथ्थर इतना छोटा न हो कि हल्क़ से नीचे उतर कर किसी बड़ी मुशिकल में डाल दे नीज़ रोज़े की हालत में मुंह में पथ्थर न रखा जाए कि इस की मिट्टी वगैरा हल्क़ में जा सकती है।

**गुफ़्त-गू लिख कर मुहा-सबा करने वाले ताबेई बुज़ुर्ग**

हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन ख़ुसैम **رَحْمَةُ اللهِ الْكَرِيمِ عَلَيْهِ** ने बीस साल तक दुन्यावी बात ज़बान से नहीं की, जब सुब्ह होती तो क़लम दवात और कागज़ ले लेते और दिन भर जो बोलते उसे लिख लेते और शाम को (उस लिखे हुए के मुताबिक़) अपना **मुहा-सबा** फ़रमाते।

(احياء العلوم ج ٣ ص ١٣٧)

**बातचीत के मुहा-सबे का तरीक़ा**

अपना "मुहा-सबा" करने से मुराद यहां येह है कि अपनी हर हर बात पर ग़ौर कर के अपने आप से बाज़पुर्स करना म-सलन फुलां बात क्यूं की ? उस मक़ाम पर बोलने की क्या हाज़त थी ?

**फ़रमाते मुस्ताफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

फुलां गुफ़्त-गू इतने अल्फ़ाज़ में भी निमटाई जा सकती थी मगर इस में फुलां फुलां लफ़ज़ जाइद क्यूं बोले ? फुलां से जो जुम्ला तुम ने कहा वोह शर-ई इजाज़त से न था बल्कि दिल आज़ार तन्ज़ था, उस का दिल दुखा होगा अब चलो तौबा भी करो और उस इस्लामी भाई से मुआफ़ी भी मांगो, उस बैठक में क्यूं गए जब कि मा'लूम है कि वहां फुज़ूल बातें भी होती हैं और फुलां फुलां बात में तुम ने हां में हां क्यूं मिलाई थी ? वहां तुम्हें ग़ीबत भी सुननी पड़ गई थी बल्कि तुम ने ग़ीबत सुनने में दिलचस्पी भी ली थी चलो पक्की तौबा और ऐसी बैठकों से दूर रहने का भी अहद करो। इस तरह समझदार आदमी अपनी गुफ़्त-गू बल्कि रोज़ मर्रा के जुम्ला मुआ-मलात का मुहा-सबा कर सकता है। यूं गुनाह, बे एहतियातियां, अपनी बहुत सारी कमज़ोरियां और ख़ामियां सामने आ सकतीं और इस्लाह का सामान हो सकता है। दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में मुहा-सबे को फ़िक्रे मदीना कहते हैं और दा'वते इस्लामी में रोज़ाना कम अज़ कम 12 मिनट फ़िक्रे मदीना करने और इस दौरान म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर करने का ज़ेहन दिया जाता है।

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विदे ज़बां रहे

मेरी फुज़ूल गोई की आदत निकाल दो

(वसाइले बख़्शाश, स. 164)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

**उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ फूट फूट कर रोए**

हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ف़रमाते हैं कि



**फ़रमाने मुखफा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** (س) ۱ (س) उस पर दस रहमते भेजता है।

बोलना अगर्चे मख्लूक के लिये नफ़अ बख़्श है लेकिन खुद बोलने वाले के लिये इस में कई फ़सादात के ख़तरात भी मौजूद हैं म-सलन अगर अच्छा मुबल्लिग़ है तो अपनी फ़साहत व बलागत और गुफ़्त-गू की रवानी पर दूसरों की तरफ़ से मिलने वाली दादो तहूसीन के सबब या सिर्फ़ अपनी सलाहियत पर घमण्ड के बाइस या अपने आप को “कुछ” समझने और दूसरों को हक़ीर जानने या सिर्फ़ नफ़सानियत की वजह से दूसरों पर धाक़ बिठाने और अपनी वाह वाह करवाने की खातिर ख़ूब मुहा-वरात व उम्दा फ़िक़रात वगैरा की तरकीबें करते रहने नीज़ इस के लिये अदक़ या’नी मुश्किल या ख़ूब सूरत अल्फ़ज़ बोलने वगैरा वगैरा के फ़ितनों में पड़ सकता है। अगर अ-रबी बोलचाल पर उबूर हुवा तो बात व बयानात में अपनी अ-रबी दानी का सिक्का जमाने की खातिर ख़ूब अ-रबी मकूलों वगैरा के इस्ति’माल के फ़ितने में मुब्तला हो सकता है, इसी तरह जिस की आवाज़ अच्छी हो वोह भी ख़तरों में घिरा रहता है, चूँकि लोग अक्सर ऐसों की ता’रीफ़ करते हैं जिस पर “फूल” कर उस के मग़रूर हो जाने, अच्छी आवाज़ को अतिय्यए खुदा वन्दी (या’नी अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की अता) समझने के बजाए अपना कमाल समझ बैठने वगैरा ग़-लतियों का ख़दशा रहता है। तो उन अल्लिमे रब्बानी की “बोलने” के मु-तअल्लिक़ तम्बीह बजा है और वाकेई जो मुबल्लिग़ मज़क़ूरा मज़मूम सिफ़ात रखता हो उस का बोलना उस के अपने हक़ में बहुत बड़ा फ़ितना और बरबादिये आख़िरत का सामान है अगर्चे मख्लूक को उस से नफ़अ पहुंचता हो।

**बात को फुज़ूलिय्यात से पाक करने का बेहतरीन नुस्खा**

अपनी गुफ़्त-गू में कमी लाने के जो वाकेई ख़्वाहिश मन्द हैं उन

**फ़रमाने मुख़लाफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शख़्स मुझ पर दुरुद पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

के लिये अपनी बात की तन्कीह (या'नी छानबीन) करने और अपनी गुफ़्त-गू को बे जा या ज़रूरत से जाइद लफ़्ज़ों और मुख़लाफ़िफ़ ख़ामियों से पाक करने नीज़ नुक्सान देह बल्कि फुज़ूलिय्यात की आमैजिश से बचाने के लिये “एहयाउल उलूम” से एक बेहतरीन नुस्खा पेश किया जाता है चुनान्चे **हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي** के फ़रमाने वाला शान का खुलासा है : गुफ़्त-गू की चार किस्में हैं : **1** मुकम्मल नुक्सान देह बात **2** मुकम्मल फ़ाएदे मन्द बात **3** ऐसी बात जो नुक्सान देह भी हो और फ़ाएदे मन्द भी। और **4** ऐसी बात जिस में न फ़ाएदा हो न नुक्सान। पस **पहली** किस्म की बात जो कि मुकम्मल नुक्सान देह है उस से हमेशा परहेज़ ज़रूरी है। और इसी तरह **तीसरी** किस्म वाली बात कि जिस में नुक्सान और फ़ाएदा दोनों हैं, इस से भी बचना लाज़िम है। और जो **चौथी** किस्म है वोह **फुज़ूलिय्यात** में शामिल है कि उस का न कोई फ़ाएदा है और न ही कोई नुक्सान लिहाज़ा ऐसी बात में वक्त ज़ाएअ करना भी एक तरह का नुक्सान ही है। इस के बा'द सिर्फ़ **दूसरी** ही किस्म की बात रह जाती है या'नी बातों में से तीन चौथाई (या'नी 75%) तो काबिले इस्ति'माल नहीं और सिर्फ़ एक चौथाई (या'नी 25%) बात जो कि फ़ाएदे मन्द है बस वोही काबिले इस्ति'माल है मगर इस काबिले इस्ति'माल बात के अन्दर बारीक किस्म की रियाकारी, बनावट, गीबत, झूटे मुबा-लगे “मैं मैं करने की आफ़त” या'नी अपनी फ़ज़ीलत व पाकीजगी बयान कर बैठने वगैरा वगैरा अन्देशे हैं नीज़ फ़ाएदे मन्द गुफ़्त-गू करते करते फुज़ूल बातों में जा पड़ने फिर उस के ज़रीए मज़ीद आगे बढ़ते हुए इस में गुनाह का इरतिकाब हो

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख्त हो गया ! (अबुनूँ)

जाने वगैरा वगैरा ख़दशात शामिल हैं और येह शुमूलिय्यत ऐसी बारीक है जिस का इल्म नहीं होता, लिहाज़ा इस क़ाबिले इस्ति'माल बात के ज़रीए भी इन्सान ख़तरात में घिरा रहता है ।

(مُلَخَّصٌ اَزْ اَحْيَاءِ الْعُلُومِ ج ٣ ص ١٣٨)

चुप रहने में सो सुख हैं तू येह तजरिबा कर ले  
ऐ भाई ! ज़बां पर तू लगा कुफ़्ले मदीना

(वसाइले बख़्शाश, स. 66)

**बे वुकूफ़ बे सोचे बोलता है**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अक्ल मन्द पहले बात को तोलता है फिर मुंह से बोलता है और बे वुकूफ़ जो कुछ जी में आए बोलता चला जाता है, चाहे इस की वजह से कितना ही ज़लील क्यूं न होना पड़े । चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : लोगों में मशहूर था कि अक्ल मन्द की ज़बान उस के दिल के पीछे होती है वोह बात करने से पहले अपने दिल से रुजूअ करता है या'नी ग़ौर करता है कि कहूं या न कहूं ? अगर मुफ़ीद होती है तो कहता है वरना चुप रहता है । जब कि बे वुकूफ़ की ज़बान उस के दिल के आगे होती है कि इधर या'नी दिल की तरफ़ रुजूअ करने की नौबत ही नहीं आती बस जो कुछ ज़बान पर आया कह देता है ।

(مُلَخَّصٌ اَزْ تَنْبِيْهِ الْغَاثِلِيْنَ ص ١١٥)

**बोलने से पहले तोलने का तरीक़ा**

प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! हमारे मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने कभी भी

**फ़रमाते मुखफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्द और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (दाशह)

अपनी ज़बाने हक्के तरजुमान से कोई **फ़ालतू लफ़ज़** अदा नहीं फ़रमाया और न ही कभी क़हक़हा लगाया। काश ! यह ख़ामोशी और ज़ोर से न हंसने की **सुन्नतें** भी आम हो जाएं। ऐ काश ! हम “बोलने” से पहले “तोलने” के आदी बन जाएं। **तोलने** का तरीका यह है कि इस से पहले कि अल्फ़ाज़ ज़बान से अदा हों अपने दिल से सुवाल कर लिया जाए कि इस बोलने का मक़सद क्या है ? क्या मैं किसी को नेकी की दा'वत दे रहा हूं ? क्या यह बात जो मैं बोलना चाहता हूं इस में मेरा या किसी दूसरे का भला है ? मेरी बात कहीं ऐसे मुबा-लगे से पुर तो नहीं जो मुझे झूट के गुनाह में मुब्तला कर दे। झूटे मुबा-लगे की मिसाल देते हुए **सदरुशरीअह**, **बदरुत्तरीक़ह** हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَوْنِي फ़रमाते हैं : “अगर एक मरतबा आया और यह कह दिया कि हज़ार मरतबा आया तो **झूटा** है।” (बहारे शरीअत, जि. 3, स. 519) यह भी सोचे कि मैं कहीं किसी की **झूटी ता'रीफ़** तो नहीं कर रहा ? किसी की **गीबत** तो नहीं हो रही ? मेरी इस बात से किसी का दिल तो नहीं दुख जाएगा ? बोल कर नदामत के सबब रुजूअ करने या SORRY कहने की नौबत तो नहीं आएगी ? थूक कर चाटने या'नी जोश में कही हुई बात वापस तो नहीं लेनी पड़ेगी ? कहीं अपना या किसी दूसरे का **राज़** फ़ाश तो नहीं कर बैठूंगा ? बोलने से पहले बात को तोलने में अगर यह बात भी सामने आई कि इस बात में न नफ़अ है न नुक़सान और न ही सवाब है न गुनाह, तब भी यह बात बोल देने में एक तरह का नुक़सान ही है क्यूं कि ज़बान को इस तरह की फुज़ूल और बे फ़ाएदा गुफ़्त-गू के लिये ज़हमत देने के बजाए



**फ़रमाते मुस्ताफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (मोअज़ान)

अगर **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ** (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) कह लिया जाए या दुरूद शरीफ़ पढ़ लिया जाए तो यकीनन इस में फ़ाएदा ही फ़ाएदा है और येह अपने अनमोल वक़्त का बेहतरीन इस्ति'माल है, ऐसे अज़ीम फ़ाएदे का ज़ाएअ होना भी लाज़िमन नुक्सान ही है।

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विदें ज़बां रहे  
मेरी फ़ुज़ूल गोई की अ़ादत निकाल दो

(वसाइले बख़्शिश, स. 164)

## चुप रहने का तरीक़ा

घ्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़ुज़ूल गोई गुनाह न सही मगर इस में महरूमियां और काफ़ी नुक्सानात मौजूद हैं लिहाज़ा इस से बचना बेहद ज़रूरी है। काश ! काश ! ऐ काश ! ख़ामोशी की अ़ादत डालने के लिये ज़बान पर “कुफ़्ले मदीना” लगाने की सअ़ादत मिल जाती।

**हिक़ायत** : हज़रते सय्यिदुना **मुवर्रिक् इज़्ली** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि एक ऐसा मुअ़ा-मला जिसे मैं 20 साल तक हासिल करने की कोशिश करता रहा लेकिन पा न सका मगर फिर भी उस की त़लब नहीं छोड़ी। पूछा गया : वोह अहम चीज़ क्या है ? फ़रमाया : **ख़ामोश रहना**। (الْكُفْلُ لِلْإِمَامِ أَحْمَدَ ص ٣١٠ رَقْم ١٧٦٢) ख़ामोशी के त़लब गार को चाहिये कि ज़बान से करने के बजाए रोज़ाना थोड़ी बहुत बातें लिख कर या इशारे से भी कर लिया करे **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** इस तरह ख़ामोशी की आदत शुरूअ हो जाएगी। **“दा”** वते इस्लामी” की तरफ़ से नेक बनने के अज़ीम नुस्खे **“म-दनी इन्आमात”** का एक म-दनी इन्आम येह भी है : **क्या आज आप**

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोजे जुमूआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (तर्क़ीम)

ने ज़बान का कुफ़ले मदीना लगाते हुए फ़ुज़ूल गोई से बचने की आदत डालने के लिये कुछ न कुछ इशारे से और कम अज़ कम चार बार लिख कर गुफ़्त-गू की ? ख़ामोशी की आदत बनाने की कोशिश के दौरान ऐसा भी हो सकता है कि फ़ुज़ूल गोई से बचने की कोशिश में चन्द रोज़ काम्याबी मिली मगर फिर बोलने की आदत हस्बे मा'मूल हो जाए, अगर ऐसा हो भी तो हिम्मत मत हारिये, बार बार कोशिश कीजिये ज़ब्बा सच्चा हुवा तो **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** काम्याबी ज़रूर हासिल होगी। **ख़ामोशी की आदत बनाने की मशक़ करने के दौरान अपना चेहरा मुसकराता रखना मुनासिब है** ताकि किसी को येह न लगे कि आप उस से नाराज़ हैं जभी मुंह “फुलाया” हुवा है। **ख़ामोशी की कोशिश के दिनों में गुस्सा बढ़ सकता है** लिहाज़ा अगर कोई आप का इशारा न समझ पाए तो हरगिज़ उस पर गुस्से का इज़हार न कीजिये कि कहीं बे जा दिल आज़ारी वगैरा का गुनाह न कर बैठें। इशारे वगैरा से गुफ़्त-गू सिर्फ़ उन्हीं के साथ मुनासिब रहती है जिन के साथ आप की ज़ेहनी हम आहंगी हो, अजनबी या ना मानूस आदमी हो सकता है कि इशारे वगैरा की गुफ़्त-गू के सबब आप से “नाराज़” हो जाए, लिहाज़ा उस के साथ ज़रूरतन ज़बान से बातचीत कर लीजिये। बल्कि कई सूरतों में ज़बान से बोलना वाजिब भी हो जाता है। म-सलन मुलाक़ाती के सलाम का जवाब वगैरा। किसी से मुलाक़ात के वक़्त सलाम भी इशारे से नहीं ज़बान से करना **सुन्नत** है। यूं ही दरवाज़े पर कोई दस्तक दे और अन्दर से पूछा जाए कौन है? तो जवाब में बाहर वाला, “मदीना! खोलो!”, मैं हूँ” वगैरा न कहे बल्कि **सुन्नत** येह है कि अपना नाम बताए।

फ़रमाने मुखफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये तहारत है। (بريطانی)

## अच्छे अन्दाज़ पर पुकार कर सवाब कमाइये

होंटों से “शिश्शी” की आवाज़ निकाल कर किसी को बुलाना या मु-तवज्जेह करना अच्छा अन्दाज़ नहीं, नाम मा’लूम होने की सूरत में “मदीना !” कह कर भी नहीं बल्कि नाम या कुन्यत से पुकारे कि सुन्नत है, खुसूसन इस्तिन्जा खानों और गन्दी जगहों पर “मदीना” कह कर पुकारने से बचने की सख्त ज़रूरत है। अगर नाम न मा’लूम हो तो उस मक़ाम के उर्फ़ के मुताबिक़ मुहज्ज़ब अन्दाज़ में पुकारा जाए, म-सलन हमारे मुआ-शरे में उमूमन नौ जवान को भाईजान ! भाई साहिब ! बड़े भाई ! और उम्र रसीदा को : चचाजान ! बुजुर्गों ! वगैरा कह कर पुकारते हैं। बहर हाल जब भी किसी को पुकारा जाए तो मोमिन का दिल खुश करने के सवाब की निय्यत के साथ अच्छे में अच्छा अन्दाज़ हो और नाम भी पूरा लिया जाए नीज़ मौक़अ की मुना-सबत से आख़िर में लफ़ज़ “भाई” या “साहिब” वगैरा का भी इज़ाफ़ा हो, हज़ किया है तो “हाजी” का लफ़ज़ भी शामिल कर लिया जाए। जिस को पुकारा गया वोह “लब्बैक” (या’नी मैं हाज़िर हूं) कहे। दा’वते इस्लामी के म-दनी माहोल में अक्सर किसी की पुकार पर जवाबन “लब्बैक” कहा जाता है जो कि सुनने में बहुत भला मा’लूम होता है इस से मुसलमान के दिल में खुशी दाख़िल हो सकती है। नीज़ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का शहन्शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के याद फ़रमाने (या’नी बुलाने) पर “लब्बैक” के साथ जवाब देना अहादीस में मज़कूर है, इस के इलावा एक वलिय्युल्लाह के फे’ल से भी इस का सुबूत मिलता है। चुनान्चे करोड़ों हम्बलिय्यों के अज़ीम पेशवा हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद

**फ़रमाते मुख़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है। (टिपणी)

बिन हम्बल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से मस्अला पूछने के लिये उन्हें जब कोई अपनी तरफ़ मु-तवज्जेह करता तो अक्सर “लब्बैक” फ़रमाते। (مناقب الامام احمد بن حنبل للجوزى ص 298) मस्नून दुआओं की मशहूर किताब “हिस्ने हसीन” में है : जब कोई शख्स तुझे बुलाए तो जवाब में कहे : लब्बैक। (حصين ص 104)

**ख़ामोशी की ब-र-कत की तीन म-दनी बहारें**

﴿1﴾ **ख़ामोशी की ब-र-कत से दीदारे मुस्तफ़ा**

एक इस्लामी बहन की तहरीर का लुब्बे लुबाब है : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की तरफ़ से जारी कर्दा ख़ामोशी की अहम्मियत पर मन्नी सुन्नतों भरे बयान की केसिट सुन कर मैं ने ज़बान के कुफ़ले मदीना की तरकीब शुरूअ की या'नी ख़ामोशी की आदत डालने का सिल्लिसला किया, तीन ही दिन में मुझे अन्दाज़ा हो गया कि पहले मैं किस क़दर फ़लतू बातें किया करती थी !

ख़ामोशी की ब-र-कत से मुझे अच्छे अच्छे ख़्वाब नज़र आने लगे, फुज़ूल गोई से बचने की कोशिश के तीसरे दिन मैं ने मक-त-बतुल मदीना की जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयान की एक मज़ीद ओडियो केसिट बनाम “इताअत किसे कहते हैं” सुनी। रात जब सोई तो الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ केसिट में बयान कर्दा एक वाक़िआ मुझे ख़्वाब में दिखाई देने लगा ! “जंग का नक़शा था, सरकारे मदीना दुश्मन की जासूसी के लिये हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को रवाना करते हैं, वोह कुफ़ार के ख़ैमों के पास पहुंचते हैं तो उन्हें कुफ़ार के सरदार हज़रते अबू सुफ़यान (जो अभी तक मुसल्मान नहीं हुए थे) खड़े हुए नज़र आते

**फ़रमाने मुखफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** (طبرانی) उस पर सो रहमतेँ नाज़िल फ़रमाता है।

हैं, मौक़अ ग़नीमत जानते हुए सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ कमान पर तीर चढ़ा लेते हैं कि इन्हें सरकारे दो अ़लम रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का हुक्म याद आता है (जिस का मफ़हूम है, कोई छेड़छाड़ मत करना) चुनान्चे अपने म-दनी अमीर की इताअत करते हुए तीर चलाने से बाज़ रहते हैं, फिर हाज़िर हो कर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमते बा ब-र-कत में कारकदर्गी पेश करते हैं। **مُذِنَ إِسْرَافِ الْمَدِينَةِ** मुझे इस ख़्वाब में सरकारे मदीना رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا और दो सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا की ख़ूब वाज़ेह तौर पर ज़ियारत नसीब हुई, बाकी सब मनाज़िर धुंदले नज़र आ रहे थे।” मज़ीद लिखा है : **الْحَمْدُ لِلَّهِ** ! सिर्फ़ तीन दिन की फुज़ूल गोई से बचने की कोशिश से मुझ पर आकाए दो अ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का बहुत बड़ा करम हो गया, बस मेरी तमन्ना है कि कभी भी मेरी ज़बान से कोई फ़ालतू लफ़ज़ न निकले। आप दुआ कीजिये कि मैं अपनी इस कोशिश में काम्याब हो जाऊं।

खुसूसन इस्लामी बहनों को इस खुश नसीब इस्लामी बहन पर काफ़ी रश्क आ रहा होगा। किसी इस्लामी बहन का ख़ामोशी इख़्तियार करना वाक़ेई बहुत बड़ी बात है क्यूं कि मर्दों के मुक़ाबले में उमूमन औरतेँ ज़ियादा बोलती हैं।

अल्लाह ज़बां का हो अ़ता कुफ़ले मदीना

मैं काश ! ज़बां पर लूं लगा कुफ़ले मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 66)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

**फरमाने मुखफा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वह मुझ पर दुरूद शरीफ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख्स है। (त्रिजिब)

## 2) अलाके में म-दनी माहोल बनाने में खामोशी का किरदार

एक इस्लामी भाई ने सगे मदीना **عَنْهُ** को जो मक्तूब भेजा उस का लुब्बे लुबाब है कि “दा'वते इस्लामी” के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में खामोशी के मु-तअल्लिक सुन्नतों भरा बयान सुनने से पहले म-दनी माहोल से वाबस्ता होने के बा वुजूद मैं बहुत फुज़ूल गो था, दुरूद शरीफ की कोई खास कसरत न थी। जब से चुप रहने की कोशिश शुरूअ की है, रोज़ाना एक हजार दुरूद शरीफ पढ़ना नसीब हो रहा है। वरना मेरा अनमोल वक्त इधर उधर की फुज़ूल बहसों में बरबाद हो जाता था। बारह दिन में पढ़े हुए 12 हजार दुरूद शरीफ का सवाब आप को तोहफतन पेश (या'नी ईसाले सवाब) करता हूं। मज़ीद अर्ज है कि मेरे बातूनी मिजाज के बाइस होने वाली कज बहसी (या'नी उलटी सीधी बातों) की नुहूसत से हमारे जैली हल्के में दा'वते इस्लामी के म-दनी काम को भी नुकसान पहुंच जाता था। पिछले दिनों हमारे हल्के में आपस का इख़िताफ़ निमटाने के लिये म-दनी मश्वरा हुवा, हैरत बालाए हैरत कि मेरी खामोशी के सबब **الْحَمْدُ لِلَّهِ** सारा झगडा ब आसानी ख़त्म हो गया। हमारे “निगराने पाक” ने खुशी का इज़हार करते हुए मुझे से बे तकल्लुफ़ी में कुछ इस तरह फ़रमाया : “मुझे बहुत डर लग रहा था कि शायद आप बहस शुरूअ करेंगे और बात का बतंगड बन जाएगा लेकिन आप के खामोशी अपनाने की ने'मत ने हमें राहत बख़्शी।” दर अस्ल बात येह है कि इस से कब्ल मुझ ना लाइक की फुज़ूल बहस और बक बक की आदते बद के सबब “म-दनी मश्वरे” वगैरा का माहोल ख़राब हो जाया करता था।

फ़रमाने मुस्त्वफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिन्न हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (म)।

## म-दनी कामों के लिये म-दनी हथियार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? फुज़ूल बातों से बचना म-दनी कामों के लिये किस क़दर मुफ़ीद है । लिहाज़ा जो सुन्नतों का मुबल्लिग़ है उसे तो हर हाल में सन्जीदा और कम गो होना चाहिये । जो बड़-बड़िया, बातूनी, दूसरों की बात काटने वाला, बार बार बीच में बोल पड़ने वाला, बात बात पर बहस व तक्कार करने और “बाल की खाल” उतारने वाला हो उस की वजह से दीन के काम को नुक़सान पहुंचने का सख़्त अन्देशा रहता है, क्यूं कि ख़ामोशी जो कि शैतान को मार भगाने का “म-दनी हथियार” है इस से येह बद नसीब महरूम है । हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को वसिय्यत करते हुए ताजदारे रिसालत, मुस्त्वफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “ख़ामोशी की कसरत को लाज़िम कर लो कि इस से शैतान दफ़अ होगा और तुम्हें दीन के कामों में मदद मिलेगी ।”

(شَعَبُ الْإِيمَانِ ج ٤ ص ٢٤٢ حَدِيثُ ٤٩٤٢)

अल्लाह इस से पहले ईमां पे मौत दे दे

नुक़सां मेरे सबब से हो सुन्नते नबी का

(वसाइले बख़्शिश, स. 108)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

③ घर में म-दनी माहोल बनाने में ख़ामोशी का किरदार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बे ज़रूरत बात, हंसी मज़ाक़, और तू तड़ाक़ की आदात निकाल देने से घर में भी आप का वक़ार बुलन्द होगा और जब घर के अफ़्साद आप के सन्जीदा पन से मु-तअस्सिर होंगे तो उन पर आप की “नेकी की दा'वत” बहुत जल्द असर करेगी और घर

**फ़रमाने मुखफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूद पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (ज़िब्राल)

में म-दनी माहोल न हुवा तो बनाने में आसानी हो जाएगी। चुनान्चे “दा वते इस्लामी” के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में ख़ामोशी की अहम्मिय्यत पर किया हुवा एक सुन्नतों भरा बयान सुन कर एक इस्लामी भाई ने जो तहरीर दी उस का खुलासा है : सुन्नतों भरे बयान में दी गई हिदायत के मुताबिकِ مُحَمَّدٌ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मुझ बातूनी आदमी ने ख़ामोशी की अ़दत डालनी शुरूअ कर दी है, سُبْحَانَ اللَّهِ ! इस का मुझे बेहद फ़ाएदा पहुंच रहा है, मेरे अबुल फुज़ूल होने की वजह से घर के अफ़राद मुझ से बदज़न थे मगर जब से चुप रहना शुरूअ किया है, घर में मेरी “पोज़ीशन” बन गई है और खुसूसन मेरी प्यारी प्यारी मां जो कि मुझ से ख़ूब बेज़ार रहा करती थीं अब बेहद खुश हो गई हैं, चूँकि पहले मैं बहुत “बक्की” था लिहाज़ा मेरी अच्छी बातें भी बे असर हो जाती थीं मगर अब मैं अम्मीजान को जब कोई सुन्नत वगैरा बताता हूं तो वोह न सिर्फ़ दिलचस्पी से सुनती हैं बल्कि अमल करने की भी कोशिश करती हैं।

बढ़ता है ख़ामोशी से वकार ऐ मेरे प्यारे  
ऐ भाई ! ज़बां पर तू लगा कुप्ले मदीना

(वसाइले बख़्शाश, स. 66)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

**“या रब्बे करीम ! हमें मुत्तकी बना” के उन्नीस  
हुस्फ़ की निस्बत से घर में “म-दनी माहोल”  
बनाने के 19 म-दनी फूल**

﴿1﴾ घर में आते जाते बुलन्द आवाज़ से सलाम कीजिये।

﴿2﴾ वालिदा या वालिद साहिब को आते देख कर ता’जीमन खड़े हो जाइये।



फरमाने मुखफा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो **اللَّهُمَّ** عز وجل तुम पर रहमत भेजेगा। (अबुदौद)

﴿3﴾ दिन में कम अज़ कम एक बार इस्लामी भाई वालिद साहिब के और इस्लामी बहनें मां के हाथ और पाउं चूमा करें।

﴿4﴾ वालिदैन के सामने आवाज़ धीमी रखिये, उन से आंखें हरगिज़ न मिलाइये, नीची निगाहें रख कर ही बातचीत कीजिये।

﴿5﴾ उन का सौंपा हुआ हर वोह काम जो ख़िलाफ़े शर-अ न हो फ़ौरन कर डालिये।

﴿6﴾ सन्जी-दगी अपनाइये। घर में तू तुकार, अबे तबे और मज़ाक़ मस्ख़री करने, बात बात पर गुस्से हो जाने, खाने में ऐब निकालने, छोटे भाई बहनों को झाड़ने, मारने, घर के बड़ों से उलझने, बहसें करते रहने की अगर आप की आदतें हों तो अपना रवय्या यक्सर तब्दील कर दीजिये, हर एक से मुआफ़ी तलाफ़ी कर लीजिये।

﴿7﴾ घर में और बाहर हर जगह आप सन्जीदा हो जाएंगे तो **إِنْ شَاءَ اللهُ** عزوجل घर के अन्दर भी ज़रूर इस की ब-र-कतें ज़ाहिर होंगी।

﴿8﴾ मां बल्कि बच्चों की अम्मी हो तो उसे नीज़ घर (और बाहर) के एक दिन के बच्चे को भी “आप” कह कर ही मुख़ातिब हों।

﴿9﴾ अपने महल्ले की मस्जिद में इशा की जमाअत के वक़्त से ले कर दो घन्टे के अन्दर अन्दर सो जाइये। काश ! तहज्जुद में आंख खुल जाए वरना कम अज़ कम नमाज़े फ़ज़्र तो ब आसानी (मस्जिद की पहली सफ़ में बा जमाअत) **मुयस्सर** आए और फिर कामकाज में भी सुस्ती न हो।

﴿10﴾ घर के अफ़राद में अगर नमाज़ों की सुस्ती, बे पर्दगी, फ़िल्मों डिरामों और गाने बाजों का सिल्लिसला हो और आप अगर सर परस्त नहीं हैं, नीज़ ज़न्ने ग़ालिब है कि आप की नहीं सुनी जाएगी तो बार बार टोका

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूद पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूद पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (बायूम्)

टोक के बजाए, सब को नरमी के साथ **मक-त-बतुल मदीना** से जारी शुदा सुन्नतों भरे बयानात की ओडियो केसिटें, ओडियो/विडियो सीडीज़ सुनाइये दिखाइये, **म-दनी चेनल** दिखाइये।  
**“म-दनी नताइज”** बरआमद होंगे।

﴿11﴾ घर में कितनी ही डांट बल्कि मार भी पड़े, **सब्र सब्र** और **सब्र** कीजिये। अगर आप ज़बान चलाएंगे तो **“म-दनी माहोल”** बनने की कोई उम्मीद नहीं बल्कि मज़ीद बिगाड़ पैदा हो सकता है कि बे जा सख़्ती करने से बसा अवकात शैतान लोगों को ज़िद्दी बना देता है।

﴿12﴾ म-दनी माहोल बनाने का एक बेहतरीन ज़रीआ येह भी है कि घर में रोज़ाना **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स ज़रूर ज़रूर ज़रूर दीजिये या सुनिये।

﴿13﴾ अपने घर वालों की दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के लिये दिलसोज़ी के साथ दुआ भी करते रहिये कि फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : **الِدُّعَاءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِنِ** : या'नी दुआ मोमिन का हथियार है।  
 (الْمُسْتَدْرَكُ لِلْمَلِكِ ج ٢ ص ١٦٢ حديث ١٨٥٥)

﴿14﴾ सुसराल में रहने वालियां जहां घर का ज़िक्र है वहां सुसराल और जहां वालिदैन का ज़िक्र है वहां सास और सुसर के साथ वोही हुस्ने सुलूक बजा लाएं जब कि कोई मानेए शर-ई न हो। हां येह एहतियात ज़रूरी है कि बहू सुसर के हाथ पाउं न चूमे, यूंही दामाद सास के।

﴿15﴾ **मसाइलुल कुरआन सफ़हा 290** पर है : हर नमाज़ के बा'द येह दुआ अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ एक बार पढ़ लीजिये, **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** बाल बच्चे सुन्नतों के पाबन्द बनेंगे और घर में

फ़रमाने मुखफ़ा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْوَسْمُ : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है **अव्वल**  
(मरदान)। उस के लिये एक क़ीरात अन्न लिखता और क़ीरात उधुद पहाड़ जितना है।

म-दनी माहोल काइम होगा। (दुआ येह है :) (اللَّهُمَّ)

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا ذُرِّيَّتًا قَرَّةً أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ﴿١٥﴾  
("اللَّهُمَّ" आयते कुरआनी का हिस्सा नहीं)

﴿16﴾ ना फ़रमान बच्चा या बड़ा जब सोया हो तो 11 या 21 दिन तक उस के सिरहाने खड़े हो कर येह आयाते मुबा-रका सिर्फ़ एक बार इतनी आवाज़ से पढ़िये कि उस की आंख न खुले :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَجِيدٌ ﴿٢١﴾ فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ ﴿٢٢﴾

(अव्वल, आख़िर, एक मर्तबा दुरूद शरीफ़) याद रहे ! बड़ा ना फ़रमान हो तो सोते सोते सिरहाने वज़ीफ़ा पढ़ने में उस के जागने का अन्देशा है खुसूसन जब कि उस की नींद गहरी न हो, येह पता चलना मुश्किल है कि सिर्फ़ आंखें बन्द हैं या सो रहा है लिहाज़ा जहां फ़ितने का ख़ौफ़ हो वहां येह अमल न किया जाए ख़ास कर बीबी अपने शोहर पर येह अमल न करे।

﴿17﴾ नीज़ ना फ़रमान औलाद को फ़रमां बरदार बनाने के लिये ता हुसूले मुराद नमाज़े फ़ज़्र के बा'द आस्मान की तरफ़ रुख़ कर के "يَا شَهِيدُ" 21 बार पढ़िये। (अव्वल व आख़िर, एक बार दुरूद शरीफ़)।

﴿18﴾ म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ अमल की आदत बनाइये और घर के जिन अफ़राद के अन्दर नर्म गोशा पाएं उन में और आप अगर

1 : तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक और हमें परहेज़ गारों का पेशवा बना। (प १९, الفرقان १५)

2 : तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बल्कि वोह कमाल शरफ़ वाला कुरआन है लौहे महफूज़ में। (प ३०, البروج: २१, २२)

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे। (طبرانی)

बाप हैं तो औलाद में नरमी और हिक्मते अ-मली के साथ म-दनी इन्आमात का निफ़ाज़ कीजिये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत से घर में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा।

﴿19﴾ पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले में अशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कर के घर वालों के लिये भी दुआ कीजिये। म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की ब-र-कत से भी घरों में म-दनी माहोल बनने की “म-दनी बहारें” सुनने को मिलती हैं।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बयान को इख़िताम की तरफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत हासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से महब्वत की उस ने मुझ से महब्वत की और जिस ने मुझ से महब्वत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा। (ابن عساکر ج ٩ ص ٣٤٣)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आका

जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

**“मिस्वाक करना सुन्नते मुबा-रका है” के बीस हुरूप की निखत से मिस्वाक के 20 म-दनी फूल**

पहले दो फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुला-हज़ा हों :

❁ दो रकअत मिस्वाक कर के पढ़ना बिगैर मिस्वाक की 70 रकअतों से अफ़ज़ल है ❁ (التَّرْغِيبُ وَالتَّرْهِيْبُ ج ١ ص ١٠٢ ح ١٨١٨)

**फ़रमाते मिस्वाक** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुद पाक पढ़ा **अल्लाह** (سَلِّمْ) उस पर दस रहमतें भेजता है।

लाजिम कर लो क्यूं कि इस में मुंह की सफ़ाई और रब तआला की रिज़ा का सबब है (مسند الإمام أحمد بن حنبل ج ٢ ص ٤٢٨ حديث ٥٨٦٩) ❀ **दा'वते इस्लामी** के इशाअती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ **बहारे शरीअत** जिल्द अव्वल सफ़हा 288 पर **सदरुशरीअह, बदरुत्तरीकह** हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي लिखते हैं मशायखे किराम फ़रमाते हैं : जो शख्स **मिस्वाक** का आदी हो मरते वक़्त उसे **कलिमा** पढ़ना नसीब होगा और जो **अफ़यून** खाता हो मरते वक़्त उसे **कलिमा** नसीब न होगा ❀ हज़रते सय्यिदुना **इब्ने अब्बास** رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि **मिस्वाक** में दस खूबियां हैं : मुंह साफ़ करती, मसूढ़े को मज़बूत बनाती है, बीनाई बढ़ाती, बलग़म दूर करती है, मुंह की बदबू ख़त्म करती, सुन्नत के मुवाफ़िक़ है, फ़िरिशते खुश होते हैं, रब राज़ी होता है, नेकी बढ़ाती और मे'दा दुरुस्त करती है (مَجْمَعُ الْجَوَامِعِ لِلْسُّيُوطِيِّ ج ٥ ص ٢٤٩ حديث ١٤٨٦٧) ❀ हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल वहहाब शा'रानी** نَقَلَ كَرْتَةً عَنْهُ : एक बार हज़रते सय्यिदुना **अबू बक्र शिब्लनी** بَغْدَادِي عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي को वुजू के वक़्त **मिस्वाक** की ज़रूरत हुई, तलाश की मगर न मिली, लिहाज़ा एक दीनार (या'नी एक सोने की अशरफ़ी) में **मिस्वाक** ख़रीद कर इस्ति'माल फ़रमाई। बा'ज लोगों ने कहा : येह तो आप ने बहुत ज़ियादा खर्च कर डाला ! कहीं इतनी महंगी भी **मिस्वाक** ली जाती है ? फ़रमाया : बेशक येह दुन्या और इस की तमाम चीज़ें **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक मच्छर के पर बराबर भी हैसियत नहीं रखतीं, अगर बरोजे क़ियामत **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मुझ से येह पूछ लिया तो क्या जवाब दूंगा कि : “तूने मेरे प्यारे हबीब की सुन्नत (मिस्वाक) क्यूं तर्क की ? जो मालो दौलत मैं ने तुझे दिया था उस की

**फ़रमाते मुस्वक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शख्स मुझ पर दुरूद पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

हकीकत तो (मेरे नज़दीक) मच्छर के पर बराबर भी नहीं थी, तो आखिर ऐसी हकीर दौलत इस अज़ीम सुन्नत (मिस्वाक) को हासिल करने पर क्यूं खर्च नहीं की?" (مُلَخَّصٌ از لَوَاعِجِ الْاِنْوَارِ ص 38) ❀ सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِيّ ف़रमाते हैं : चार चीज़ें अक्ल बढ़ाती हैं : फुजूल बातों से परहेज़, **मिस्वाक** का इस्ति'माल, सु-लहा या'नी नेक लोगों की सोहबत और अपने इल्म पर अमल करना (حياة الحيوان ج 2 ص 166) ❀ मिस्वाक पीलू या जैतून या नीम वगैरा कड़वी लकड़ी की हो ❀ मिस्वाक की मोटाई छुंग्लिया या'नी छोटी उंगली के बराबर हो ❀ मिस्वाक एक बालिशत से ज़ियादा लम्बी न हो वरना उस पर शैतान बैठता है ❀ इस के रेशे नर्म हों कि सख्त रेशे दांतों और मसूढ़ों के दरमियान ख़ला (GAP) का बाइस बनते हैं ❀ मिस्वाक ताज़ा हो तो ख़ूब (या'नी बेहतर) वरना कुछ देर पानी के गिलास में भिगो कर नर्म कर लीजिये ❀ मुनासिब है कि इस के रेशे रोज़ाना काटते रहिये कि रेशे उस वक़्त तक कार आमद रहते हैं जब तक उन में तलख़ी बाकी रहे ❀ दांतों की चौड़ाई में मिस्वाक कीजिये ❀ जब भी मिस्वाक करनी हो कम अज़ कम तीन बार कीजिये ❀ हर बार धो लीजिये ❀ मिस्वाक सीधे हाथ में इस तरह लीजिये कि छुंग्लिया या'नी छोटी उंगली उस के नीचे और बीच की तीन उंगलियां ऊपर और अंगूठा सिरे पर हो ❀ पहले सीधी तरफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर उलटी तरफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर सीधी तरफ़ नीचे फिर उलटी तरफ़ नीचे मिस्वाक कीजिये ❀ मुठ्ठी बांध कर मिस्वाक करने से बवासीर हो जाने का अन्देशा है ❀ मिस्वाक वुजू की सुन्नते क़ब्लिया है अलबत्ता **सुन्नते मुअक्कदा** उसी वक़्त है जब कि मुंह में बदबू हो (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़क़िय्या, जि. 1, स. 623)

فَرْمَانِے مُسْتَفَا صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे  
पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख्त हो गया । (ابن جن)

www.dawateislami.net

तालिबे ग़मे मदीना  
व बकीअ व मफ़िरत  
व बे हिसाब जन्नतुल  
फ़िरदौस में आका  
का पड़ोस  
यकुम मुहम्मिल हराम 1433 हि.

### येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआत, आ'रास और जुलूसे मीलाद वगैरा में  
मक-त-बतुल मदीना के शाएअ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ्लेट  
तक़सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी  
दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने  
महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों  
का पेम्फ्लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।